RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

कल्हण की राजतरंगिणी ऐतिहासिक प्ररिपेक्ष में

संगीता

इतिहास प्रवक्ता, रा.व.मा.वि., गुजरानी, जिला भिवानी

भूमिका :

कश्मीरी इतिहास लेखन की परम्परा में कल्हण और उसकी राजतरंगिणी वस्तुतः एक विश्व प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ है। कल्हण के जीवन के संबंध में पर्याप्त प्रकाश नहीं पड़ता। परन्तु समकालीन उपलब्ध स्त्रोतों के आधार पर विद्वानों ने यह लिखा है कि कल्हण एक कश्मीरी ब्राह्मण थे तथा भार्गव कुल की साारस्वत शाखा से संबंध रखते थे। उनके पिता का नाम चणपक था। जिसे स्टीन महोदय ने कश्मीर के राजा हर्ष का मन्त्री स्वीकारा है। चणपक 1135 ई. तक जीवित रहे परन्तु उन्होंने हर्ष के मरणोपरान्त राज्य कार्य में भाग नहीं लिया। इस बात का कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता कि कल्हण ने लोहर राजवंश के राजाओं के अधीन किसी अधिकारिक पद पर कार्य किया अथवा नहीं।

राजतरंगिणी में वर्णित श्लोक :

राजतरंगिणी में 8 हजार श्लोकों को दर्शाया गया है। इसका प्रमाणिक संस्करण और अनुवाद आरेल स्टीन द्वारा किया गया। कल्हण ने घटनाओं का विस्तृत और सूक्ष्म विवेचन किया है। उन्होंने प्रत्येक राजा के राज्यारोहण की तिथियों को दूसरे और तीसरे भाग में दिया है। सभी घटनाओं की कोई निश्चित तिथि में उन्होंने नहीं दी है।[1]

राजतरंगिणी पर शोधकार्य :

कवि कल्हण ने राजतरंगिणी में कश्मीर घाटी का सहस्त्रों वर्षों का इतिहास निबन्ध करने का प्रयास किया है। कवि ने शक संवत् 1070 में अपना ग्रंथ–लेखन आरम्भ किया गया था। कल्हण के इतिहास लेखन की श्रृंखला को जोनराज, श्रीवर, शुक और प्रज्ञभट्ट आदि विद्वानों ने भी जारी रखा। इन्होंने अपने ग्रंथों का नाम राजतरंगिणी ही रखा। श्री मूरक्राफर ने सर्वप्रथम राजतरंगिणी का देवनागरी संस्करण तैयार करवाया। इसी संस्करण के आधार पर एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल द्वारा राजतरंगिणी का प्रथम संस्करण 1835 में प्रकाशित किया गया।[2]

विल्सन महोदय के हिन्दू हिस्ट्री ऑफ कश्मीर नामक ग्रंथ ने पाश्चात्य विद्वानों को इस दिशा में कार्य करने की नई दिशा प्रदान की। श्री एम.ए. ट्रोयर ने 1840 में राजतरंगिणी फ्रैंच भाषा में अनुवाद प्रकाशित करवाया। साथ ही उन्होंने 1852 में राजतरंगिणी के ऐतिहासिक, भौगोलिक पक्षों पर शोधकार्य भी प्रकाशित करवाए। राजतरंगिणी पर शोध करने की दिशा में बुहलर महोदय का महत्वपूर्ण स्थान है। योगेशचन्द्र दत्त ने राजतरंगिणी का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। राजतरंगिणी के महत्त्व ने शोध कार्यों के स्तुत्य प्रयासों की श्रृंखला को आज तक अविच्छिन्न रखा है।

स्टीन जैसे धुरंन्धर विद्वान ने राजतरंगिणी के सम्पादन और अनुवाद पर अथक परिश्रम किया। स्टीन महोदय का प्रयास भावी पीढ़ियों के लिए भी एक अमूल्य धरोहर है। वे राजतरंगिणी में वर्णित ग्रामों, शहरों, पर्वतों और अन्य प्रदेशों की खोज में जीवन भर संलग्न रहे। ग्रंथ की भूमिका और परिशिष्ट तथा टिप्पणियों में उन्होंने महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं। परवर्ती शोधकर्ता के लिए स्टीव का ग्रंथ एक दीप स्तम्भ बन गया है।

अनेक अन्य विद्वानों ने भी अनेक भाषाओं में राजतरंगिणी को अनूदित कर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कश्मीर के प्राचीन इतिहास पर शोध करने वाले विद्वानों ने राजतरंगिणी का गहन और सटीक अध्ययन करते हुए अनेक महत्वपूर्ण महलुओं पर प्रकाश डाला है। कृष्ण स्वरूप सक्सेना के शोध–ग्रंथ "पॉलिटिक्स हिस्ट्री ऑफ कश्मीर" में राजनीतिक घटनाक्रम का विशद सजीव और प्रामाणिक स्वरूप उपस्थिति किया गया है। घटनाओं की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिए उन्होंने मुख्य रूप से अभिलेखों और अन्य इतिहास ग्रन्थों का आश्रय लेकर अपने अध्ययन को एक नई दिशा प्रदान की।[3] इसी प्रकार डॉ. सुनीलचन्द्र राय ने अर्ली हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ कश्मीर नामक ग्रंथ में राजतरंगिणी को मुख्य आधार बनाया है। कपूर ने ऐनीमैट रूलरस ऑफ एनशियन्ट कश्मीर नामक ग्रंथ में राजतरंगिणी के आधार पर कश्मीर के दस प्रमुख राजाओं के शासनकाल की मुख्य घटनाओं का वर्णन किया है। सुश्री कृष्णमोहन ने अपने ग्रंथ 'अर्ली मैडीवल हिस्ट्री ऑफ कश्मीर में राजतरंगिणी की सप्तम और अष्टम रतंग को मुख्य आधार बनाकर शोध कार्य किया है। श्री सुभाष विद्यालंकार ने संस्कृत भाषा में राजतरंगिणी पर महत्त्वपूर्ण विवरणात्मक ग्रंथ लिखा है।

कल्हण की राजतरंगिणी में वर्णित आठ खण्ड :

प्रथम खण्ड : प्रथम अध्याय में कवि कल्हण तथा उनके अनुपम ग्रंथ राजतरंगिणी की समालोचना करने के पश्चात् राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है। राजा तथा राजनीति के संबंध की विवेचना करके, कल्हण की एक इतिहासकार के रूप में समीक्षा की गई है। कल्हण के राजनैतिक विचारों पर भी चर्चा की गई है। तदुपरान्त राजा, राज्याधिकारी, राज्याभिषेक, राजवंश, प्रशासन, राज्य के अधिकारीगण, मंत्रीमण्डल, मंत्रीपरिषद् द्विजपरिषद, राज्य के अन्य अधिकारियों जैसे पादाग्र, कम्पनाधिपति, द्वारपति, नगराधिय मण्डलेश तथा कायस्थों के क्रियाकलापों के बारे में भी चर्चा की गई है कि वे राजनीतिक परिस्थितियों के परिवर्तन में किस प्रकार योग देते रहे हैं। तदुपरान्त कश्मीर घाटी, कश्मीर घाटी के सीमान्त, कश्मीर के विदेशों से संबंध, कश्मीर घाटी का राजनीतिक विभजन, प्रादेशिक प्रशासन, सेना दंग,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

करव्यवस्था न्यायप्रणाली की चर्चा की गई है। डामर, लवन्य, तन्ती, एकांग, शाही वंश के बारे में भी उल्लेख किया गया है, जिन्होंने राजनीतिक कुचक्रों द्वारा कश्मीर घाटी में उथल–पुथल मचाई थी।

द्वितीय खण्ड :

द्वितीय अध्याय में राजतरंगिणी की प्रथम तरंग के गोनन्द प्रथम, दामोदर प्रथम, यशोवती, गोनन्द द्वितीय, लव, कुश, खगेन्द्र, सुरेन्द्र, गोधर, सुवर्ण, जनक, शनीचर, अशोक, जलोक, दामोदर द्वितीय, हुष्क, जुष्क, कनिष्क, अभिमन्यु प्रथम, गोनन्द तृतीय, विभीषण प्रथम, इन्द्रजीत, रावण, विभीषण द्वितीय, नर प्रथम, सिद्ध उत्पलाक्ष, हिरण्याक्ष, हिरण्यकुल, वसुकुल, मिहिरकुल वक, क्षितिनन्द, वसुनन्द, नर द्वितीय, अक्ष, गोपादित्य, गोकर्ण, खिखिल युधिष्ठिर प्रथम इन राजाओं के काल की परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त होती है।[4] द्वितीय अध्याय में ही राजतरंगिणी की द्वितीय तरंग में प्रतापदित्य प्रथम, जलौक, तुंजीन प्रथम, विजय, जयेन्द्र, सन्धिमति तथा राजतरंगिणी की तृतीय तरंग में वर्णित मेघवाहन, प्रवरसेन प्रथम, हिरण्य, तोरमाण, मातृगुप्त, प्रवरसेन द्वितीय, युधिष्ठिर द्वितीय, लखण नरेन्द्रादित्य, रणादित्य (तृंजीन तृतीय), विक्रमादित्य और बालादित्य आदि राजाओं के शासनकाल की राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है।

तृतीयखंड :

राजतरंगिणी की चतुर्थ तरंग में वर्णित कर्कोट वंश के राजाओं के प्रशासन काल की परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। कर्कोट वंश के साथ ही राजतरंगिणी ऐतिहासिक काल में प्रवेश करती हैं अतः अन्यान्य प्रमाणों तथा साक्ष्यों द्वारा भी इस काल की परिस्थितियों की विवेचना की गई है। कर्कोट वंश के अन्तर्गत कल्हण ने दुर्लभवर्धन, दुर्लभक, चन्द्रापीड़ प्रथम, जयापीड़, अनंगापीड, उत्पलापीड राजाओं के शासनकाल की विभिन्न घटनाओं का उल्लेख मिलता है।[5]

चतुर्थखण्ड :

ग्रंथ के चतुर्थ अध्याय में राजतरंगिणी की पंचम तरंग में वर्णित उत्पल वंश के राजाओं के शासनकाल की परिस्थितियों की विवेचना की गई है। कवि ने प्रत्येक शासक के राज्यारोहण की तिथि का उल्लेख किया है। अतः प्रत्येक शासक के शासन की अवधि भी ज्ञात हो जाती है। राजाओं को अनेक बार राजगद्दी से उतारा गया तथा वे पुनः राजसिंहासन पर अधिकार करने में समर्थ हो पाए। इस अध्याय में अवन्तिवर्मा, शंकरवर्मा, गोपालवर्मा संकट, सुगंधा, पार्थ, निर्जितवर्मा, चक्रवर्मा, शूरवर्मा प्रथम, शंभुवर्धन, उन्मत्तावन्तिवर्मा, शूरवर्मा द्वितीय राजाओं के शासनकाल की परिस्थितियों का विवेचन किया गया है।[6] इन राजाओं में पार्थ, चक्रवर्मा और निर्जितवर्मा दो–दो बार कश्मीर के राजसिंहासन पर आसीन हुए। इन राजाओं के राजनीतिक कुचक्रों की इस अध्याय में सुचित समीक्षा की गई है।

छठा खण्ड :

राजतरंगिणी के छठे खण्ड में राजाओं के वंश की प्रामाणिक सूचना नहीं मिलती। अतः किसी राजवंश के नाम पर शोध–प्रबन्ध के अध्याय का नामोल्लेख नहीं किया जा सका। राजतरंगिणी की छठे तरंग में वर्णित यशस्कर, वर्णट, संग्रामदेव, पर्वगुप्त क्षेमगुप्त, अभिमन्यु नन्दिगुप्त, त्रिभुवनगुप्त, भीमगुप्त और रानी दिद्दा के शासनकाल की परिस्थितियों की विसतृत समीक्षा पंचम अध्याय में की गर्ठ है।

सप्तम खण्ड :

राजतरंगिणी के लेखक कल्हण के पिता चणपक राजतरंगिणी की सातवीं तरंग में वर्णित राजा हर्ष के महामात्य थे। अतः सप्तम और अष्टम तरंग में कल्हण सूक्ष्म विस्तार के साथ राजनीतिक घटनाओं की विशद व्याख्या करते हैं। सप्तम तरंग में कवि ने लोहरवंश के संग्रामराज हरिराज, अनन्त, कलश, उत्कर्ष और हर्ष राजाओं के काल की अनेकानेक घटनाओं का उल्लेख किया है।[7]

अष्टम खण्ड :

इस तरंग में कल्हण प्रत्यक्ष द्रष्टा के समान तत्कालीन राजाओं के काल का इतिहास निबन्ध करते है। इस तरंग में उच्चल, रड्ड, शंखराज, सल्हण, सुस्सल, भिक्षाचर तथा जयसिंह के शासन का वर्णन किया है। इन वर्णनों के आधार पर प्रत्येक शासक के काल की राजनीतिक परिस्थितियों की सम्यक् समीक्षा इस ग्रन्थ के सातवें अध्याय में की गई है। आठवें अध्याय में राजाओं के शासनकाल तथा वंशक्रम की तालिकाएं दी गयी हैं।

कल्हण की राजतरंगिणी के स्त्रोत :

आर.के. मजूमदार ने लिखा है कि कल्हण ने राजतरंगिणी लेखन में अपने पूर्वा एवं समकालीन स्त्रोतों–चिट्ठा, अभिलेखों, मुद्राओं प्राचीन स्मारकों तथा राजकीय अभिलेखागारों में सुरचित वंशावलियों का उपयोग किया है। कल्हण ने अपने ग्रन्थ के उयोद्धान्त के श्लोकों में उन स्त्रोतों का उल्लेख किया है। जिसमें प्रथमतः समकालीन राजाओं के संबंध में लिये गये सैनिक विवरण जो बिखरे हुए रूप में थे। उन्होंने कुछ स्त्रोतों की आलोचना भी की है। जैसा कि सुवर्त ने लिखा है।[8] इसी प्रकार क्षेमेन्द्र के क्रोनीक्ल की भी आलोचना की है। बाशम ने लिखा है कि कल्हण ने अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों तथा नीलमत पुराण का उपयोग किया है। उन्होंने स्पष्टतः यह स्वीकार किया है कि कश्मीर के नरेशों से संबंधित विवरण अपने पूर्वो की अपेक्षा अधिक पूर्ण एवं प्रामाणिक है। कल्हण ने तथ्यों के संग्रह और तिथिक्रमों को ही विवरण का आधार नहीं बनाया है, अपितु मंदिरों और मठों में रखे गये संलेखों, अभिलेखों तथा प्रशस्तियों का उपयोग किया। कल्हण ने प्राचीन मुद्राओं को भी अपने लेखन का आधार बनाया तथा मौखिक और लिखित तत्कालीन हिन्दू जीवन में प्रचलित परम्पराओं को भी स्वीकार किया है। ललितादित्य की मृत्यु (769ई.) से संबंधित परम्पराओं का उल्लेख किया है। परन्तु कल्हण ने अपनी ओर से किसी को भी नहीं माना है। अपितु यह लिखा है कि जब बड़ों की मृत्यु होती है तो उनके संबंध में अनेक प्रकार की कहानियां लोक जीवन में प्रचलित हो जाती हैं। इसी प्रकार यशस्कर की मृत्यु के संबंध में प्रचलित दो परम्पराओं का उल्लेख किया है। परन्तु किसी भी परम्परा को कल्हण ने प्रचलन के रूप में स्वीकार नहीं किया है।[9] अपितु उसकी प्रमाणिकता के संबंध में अपना विवेचन भी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दिया है। इस प्रकार कल्हण ने विभिन्न स्त्रोतों से साक्ष्यों को एकत्रित कर इतिहास भवन का जो वर्णन किया है वह आधुनिक इतिहास लेखन में प्रचलित सभी विधाओं को स्वीकार है।

राजतरंगिणी की विषय वस्तु :

कल्हण ने आरम्भ से लेकर अपने समय तक कश्मीर का वृहद इतिहास लिखना चाहा। वस्तुतः राजतरंगिणी के नाम से ही यह संकेतित है कि यह ग्रन्थ किसी एक शासनवंश का इतिहास न होकर कश्मीर का सामान्य इतिहास है। उनका विवरण कश्मीर की उत्पत्ति से प्राप्त होता है। जिसे पुराणों में प्रचलित मनु वैवस्वत की परम्पराओं से संबंधित बताया गया है। कल्हण का विवरण विक्रमादित्य (द्वितीय), जिसने मातृगुप्त को सिंहासन पर बैठाया। समय से बहुत कुछ विश्वसनीय होता है कि इसके अन्तर्गत प्रथमत पौराणिक शासकों का उल्लेख है। जिसके बाद अशोक तथा कुछ शासकों की चर्चा है। इनके तथा मातृगुप्त के बीच कई शासकों के नाम आते हैं जो प्राय हूण समझे गए प्रतीत होते हैं। कश्मीर का स्वतन्त्र इतिहास मातृगुप्त के समय से ही प्रारम्भ होता है। इससे पूर्व वह कुशाण साम्राज्य तथा पहले मौर्य साम्राज्य का अंग था। कश्मीरी इतिहासकारों की क्षेत्रीय देशभक्ति ने इन ऐतिहासिक तथ्यों को गोपन करते हुए अपने शासकों की प्राचीनता को भारत युद्ध तक खोजने को प्रेरित किया। मातृगुप्त तथा उसके उत्तराधिकारियों के विवरण के पश्चात् कश्मीर पर हूण आधिपत्य का उल्लेख है।[10] कार्कोट शासन वंश के प्रथम शासक दुर्लभवर्द्धन (7वीं शदी का प्रारम्भ) के साथ निश्चित रूप से ऐतिहासिक भूमि प्राप्त करते हैं।

कल्हण की इतिहास के प्रति दृष्टि :

कल्हण ने इतिहासकार को विद्द वर्ग से पृथक नहीं माना है। वह अपने को कवि तथा अपने ग्रन्थ को काव्य मानता है। क्योंकि कवि ही अपने दैवीदृष्टि से अतीत का साक्षात्मकार करके नोक के सम्मुख प्रस्तुत करता है। इतिहास लेखन काव्य की प्ररेणा से उत्तम प्रकार से लिखा जा सकता है। कश्मीर के अन्य प्राचीन राजाओं की महान् उपलब्धियों का विवरण इसमें नहीं लिखा जा सका। क्योंकि उनके काल में देश ने कोई उन्नति नहीं की। बाशम ने लिखा है[11] कि कल्हण की प्रथम दृष्टि थी कि उनके पास कम से कम ऐतिहासिक सत्य की कुछ अवधारणा थी। दूसरी दृष्टि नैतिक शिक्षा प्रदान करने की थी। कल्हण का विचार था कि इतिहास अधिक व्यवहारिक शिक्षा प्रदान करता है। क्योंकि प्राचीन शासन–कालों को देखने की अधिक शक्तिशाली दूरदृष्टि प्राप्त होती है। कल्हण ने राजतरंगिणी के लेखन में अपनी मातृभूमि कश्मीर के प्रति जिस राष्ट्रीयता की भावना को प्रकट किया है कि इस श्रेष्ठ भूमि को कोई विदेशी विजित नहीं कर सकता।[12] वह ऐतिहासिक दृष्टि से राष्ट्रवादी इतिहास लेखन कहा जाता है। परन्तु कल्हण ने कहीं भी राष्ट्रीयता की अति उत्साह पूर्ण व्यंजना नहीं की है। कल्हण इतिहास लेखन में पक्षपात के सर्वथा विरूद्ध है। उन्होंने इस सिद्धान्तों का मात्र प्रतिपादन ही नहीं किया, अपितु इसके अनुसार इतिहास लीखन का कार्य भी किया। कल्हण ने घटनाओं का वग्रन जिस प्रकार स्पष्ट एवं सत्य रूप में प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार राजाओं के क्रिया–कलापों के वर्णन में निरपेक्षता का भी पालन किया है। कल्हण ने एक और जहां अपने समकालीन नरेश जयसिंह के उत्तम गुणों की प्रशंसा की है वहीं दूसरी और जयसिंह द्वारा मंत्री की सूची दी गई है। उसने हत्या की भी निन्दा की है। कल्हण की ऐतिहासिक दृष्टि को उसके कर्म के सिद्धान्त में विश्वास से जाना जा सकता है। यद्यपि वह अमानवीय घटनाओं को स्वरूप प्रदा करता है तथा बुरा कार्य करने वाले को इस जन्म में या दूसरे जन्म में दण्ड प्राप्त होता है। दूसरी शक्ति भाग्य है जो मानवीय कार्यों को सम्पादित करता है। सन्धिमति मृत्यु के मुख में ढाल दी जाती है, परन्तु भाग्य की शक्ति उसे जीवन प्रदान करती है और इस प्रकार उसे सिंहासन प्राप्त हो जाता है।[13] भाग्य राजाओं की इच्छा के विपरीत भी ले जाता है। कल्हण ने विद्यातृ का उल्लेख किया है, जिसका अनुवाद स्टीन ने भाग्य किया है और ईश्वर की शक्ति माना है। अर्थात् विधातृ मानवीय रूपों को प्रमाणित करती है। मिहिरकुल अधिक दिनों तक इसलिए शासन कर सका। क्योंकि ईश्वर उसका संरक्षक था। परन्तु कल्हण मानते हैं कि आत्मविश्वासी और शक्तिषाली राजा ही कश्मीर की रक्षा कर सकता है।

कल्हण को दैवी नहीं मानते हैं। उसका मत है कि राजा अपनी प्रजा का पिता होता है, ईश्वर नहीं। राजा का कर्म उसकी प्रजा से अन्तः संबंधित होती है। अच्छे राजा अच्छी प्रजा से ही उत्थित होते हैं। अत्याचारी मिहिरकुल का अन्त प्रजा के उत्तम गुणों के कारण ही हुआ। राजा अपनी पूजा का ही एक अंग होता है। राजा अपनी भूमि, जनता, वातावरण, पशु आदि सहित एक पूर्ण सावयव होता है।

राजरिंगिणी का रचनाकाल :

राजतरंगिणी की रचना 1148–1149 ई. में की गई। उस समय में कश्मीर का शासक जयसिंह–2 था। सही अर्थों में इसे भारत का प्रथम ऐतिहासिक ग्रंथ माना जाता है। इसमें प्रारम्भ से लेकर 12वीं सदी तक का कश्मीर का इतिहास वर्णित है। ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है।[14]

कल्हण की प्रतिपादन शैली एवं योग्यता :

यद्यपि कल्हण के ग्रंथ में न्यूनताएं विद्यमान है, तथापि उसके ग्रंथ के प्रधान तथा विशेष गुण ये हैं कि उसने वास्तविक स्थिति और पक्षपात शून्यता इन दोनों गुणों को पर्याप्त रूप से अपनाया है। उसने अपने इतिहास लेखन में स्पष्टवादिता का पूर्ण परिचय दिया है। अपने समय के राजाओं के गुण दोष, मंत्रियों की कार्यपटुता अथवा कमजोरियां, राज सेविकों की कृतघ्नता और स्वामीभक्ति का शब्द चित्र बड़े उत्तम ढंग से अंकित किया है। उसने दरबारी कवियों के समान अपने आश्रयदाता को सकल गुण निधान एवं सर्वश्रेष्ठ और उसके विपक्षियों को सर्वथा अयोग्य ठहराने का प्रयत्न नहीं किया। निन्दा अथवा स्तुति सभ्यतापूर्वक पक्षपात को छोड़कर सच्चाई के साथ उसका वर्णन किया है।[15] महाकवि कल्कण ने भी अपने समय के इतिहास को लिखते हुए इसी सत्यावादिता का पूर्ण परिचय दिया है। कल्हण ने जयापीड राजा के मरणोपरान्त मास तथा तिथियां भी लिखना प्रारम्भ किया है। उसने प्रत्येक शासनकाल के प्रारम्भ तथा अंत के अतिरिक्त होने वाले विशेष परिवर्तनों का विस्तार के साथ वर्णन किया है। 'इतिहास' लेखन की वंशावली की ओर अवश्य ध्यान देना

RRIJM 2015, All Rights Reserved

चाहिए, इसलिए कल्हण को जहां महत्वपूर्ण एंव विश्वासनी प्रमाण मिला है, वहां पर नवीन व्यक्ति के वंश का परिचय कल्हण ने बड़ी सावधानीपूर्वक दिया है।[16]

परिस्थितियाँ :

हिन्दी मानक कोष के अनुसार परिस्थिति का अर्थ है किसी व्यक्ति के चारों और होने वाली वे सब बातें या उनमें से कोई एक, जिससे बाध्य या प्रेरित होकर वह कोई कार्य करता हो। परिस्थिति शब्द संस्कृत में परिपूर्वक स्था धातु में क्तित् प्रत्यय के योग से बना है। अधिकतर संस्कृत कोषों में परिस्थिति का अर्थ प्राप्त नहीं है। चारों ओर पाये जाने वाली स्थिति अर्थात् परितः स्थिति को ही परिस्थिति माना जाता है।[17]

राजनीतिः राजनीति का शब्दतः

अर्थ राजा की नीति है। नीति शब्द 'नी' ले जाना अर्थमूलक धातु से बना है। राजा जिस मार्ग से स्वयं को, राज्य की प्रजा को, मंत्रिमंडल, सेना और कोष आदि को ले जाता है।

कल्हण के राजनीतिक विचार :

कल्हण ने राजतरंगिणी में राजाओं के इतिहास का वर्णन करते हुए बीच–बीच में अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक विचार, एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

राजा :

शासन की न्याय–व्यवस्था और सैनिक विभागों का प्रधान राजा था। कभी–कभी राजा प्रजा द्वारा निर्वाचित होते थे। पर वंशगत राजत्व ने धीरे–धीरे प्रथा का रूप धारण कर लिया। स्त्रियाँ पूर्णतया राज्याधिकार से रहित न थी, पर अत्यल्प रानियों ने ही कश्मीर घाटी पर शासन किया है।[18]

राज्याधिकारी :

सामान्यतः कश्मीर में राजपद पैतृक और कुलक्रमागत ही था। राजा की मृत्यु के पश्चात् उसका सुयोग्य अथवा अयोग्य ज्येष्ठ पुत्र ही सामान्यतः राजपद का अधिकारी होता था।

राज्याभिषेक :

राजतरंगिणी में हमें कश्मीर के इतिहास में अभिषेक प्रणाली के प्रचलन के कई महत्वपूर्ण तथा अनोखे उल्लेख मिलते हैं। अभिषेक समयानुसार द्विजों, मंत्रियों और पीर जनों द्वारा होता रहा है।

राजवंश :

कश्मीर में अधिकतर क्षत्रिय ही राजा बनते थे। कर्कोट वंश के राजाओं की उत्पत्ति कर्कोट नाम से मानी जाती है। लोहर वंश के राजा क्षत्रिय थे। राजा डोम आदि कन्याओं से भी विवाह कर लेते थे। इससे पता चलता है कि कश्मीर में गणतन्त्र न होने पर आधुनिक भारतीय संविधान के समकक्ष ही जाति, वंश आदि राजा बनने में बाधक नहीं थे।[19]

प्रशासन :

कवि कल्हण ने सर्वप्रथम जलौक के काल में राज्य की प्रशासकीय व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। जलौक से पूर्व की राजकीय व्यवसथा के बारे में कल्हण केवल इतनी ही सूचना देते हैं कि जलौक के शासन से पूर्व कश्मीर मण्डल पर भी सामान्य देशों के समान प्रशासन किया जाता था। अन्य राजाओं के समान धर्माध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सेनाध्यक्ष, दूत, पुरोहित और ज्योतिषी ये सात अधिकारी राज्य प्रशासन में सहायता करते थे।

मंत्रिपरिषद् :

कश्मीर घाटी के इतिहास में मंत्रीपरिषद् का इतिहास भी पुरोहित परिषद् की भांति वर्षों तक अविच्छिन्न रूप से मिलता है। द्विज परिषद् का क्षेत्र समयानुसार धार्मिक एवं राजनीतिक हो जाता था। मंत्रिपरिषद् का क्षेत्र राजनीति तक सीमित था। राजा के अस्तित्व तथा जमाव दोनों कालों में यह संस्था अबाध गति से अपना काम करती थी। मंत्रिपरिषद् के पास काफी शक्ति थी। यह राजा को निष्काषित कर सकती थी व उसको बन्दी भी बना सकती थी। यह सेना द्वारा राजभवन तक को घेर लेती थी।[20]

सामाजिक स्थिति :

भारतीय समाज चार वर्गों में विभाजित था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र। राजरंगिणी में राजा को सभी जातियों को खुश रखने वाला कहा गया है। राजा क्षत्रिय होता था। जबकि कुछ उदाहरण वैश्य और शुद्र के भी राजा बनने के मिलते हैं। ब्राह्मणों को उनके धार्मिक कार्यों के प्रति अग्रहार भूमि दान में दी जाती थी। वे कश्मीर की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। संयुक्त परिवार प्रणाली हिन्दू परिवार की सबसे खास विशेषता थी। एक परिवार के सभी सदस्य एक समान छत के नीचे रहते थे और सम्पत्ति का विभाजन परिवार में सामान्य व बराबर था। कथा सरित सागर संयुक्त परिवार की कथाओं से भरा पड़ा है।[21]

विधवा की स्थिति :

समाज में विधवा की स्थिति संतोषजनक न थी। विधवा के लिए पुनः विवाह करवाना कोई आम बात नहीं थी। किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाने का अर्थ था कि वह सामाजिक रूप से नष्ट हो चुकी है। अल्बेरूनी लिखता है कि यदि किसी स्त्री का पति मर जाता था तो वह पुनः किसी व्यक्ति के साथ विवाह नहीं कर सकती थी। वह केवल दो चीजों का चुनाव कर सकती थी।[22] पहली यह कि वह अपना सारा जीवन विधवा के रूप में गुजारे और दूसरा यह कि वह अपने पति की चिता के साथ जीवित जल जाएं। जिन रानियों के राजा मर जाते थे उन्हें अपने झूठे सम्मान के लिए अपने पति के साथ नहीं जलती थी उसे बहुत ही कष्टनीय जीवन व्यतीत करना पड़ता था। क्षत्रिय जाति में यह प्रथा या धारणा 400 ईसा पूर्व से लेकर 700 ई. तक अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी।

आर्थिक स्थिति :

सामन्तवाद का इतना विस्तृत रूप मिलता है कि उसे किसी विशष परिभाषा में परिभाषित नहीं किया जा सकता, मिस्टर गीब्स मानते हैं कि सामन्तवाद को परिभाषित इसलिए नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह सभी जगह समान न था। कश्मीर में राजा नीति बनाता व मन्त्री उन्हें लागू करते थे। इन्हें करवाने के लिए कुछ अधिकारियों की भी नियुक्ति की जाती थी।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कृषि :

कश्मीर में भी परम्परागत कृषि की जाती थी। चावल की फसल कश्मीरियों की महत्वपूर्ण फसल थी। भगवान की पूजा में भी इसका उपयोग किया जाता था।[23] आमतौर पर इसे धन्य कहा जाता था चैत्र मास में इसे बोया जाता था व भद्रा और असविना में यह फसल पक कर तैयार हो जाती थी। ह्वेसांग जिसने 7वीं शताब्दी में कश्मीर की यात्रा की थी वह कहता है कि एक अच्छी कृषि और फल पौधों के उत्पादन की ऐसी छटा कहीं और देखने को नहीं मिलती। कल्हण और बिल्हण अंगूरों की खेती का वर्णन करते हैं।

सिंचाई :

कश्मीर में सिंचाई की बेहतर सुविधा थी। कई बार गर्मियों में भारी वर्षा के कारण बाढ़ आ जाती थी। भारी हिमपात के कारण भी फसलों पर कुप्रभाव पड़ता था। दामोदरा, बालादित्य और ललितादित्य ने फसलों को बाढ़ से बचाने के लिए बांध बनवाए। इस दिशा में सबसे गम्भीर प्रयास अवन्तिवर्मन के समय में किया गया।

व्यवसाय उद्योग–धन्धे :

कश्मीर के लोगों का सबसे मुख्य धन्धा कृषि था और विभिन्न प्रकाश के उद्योग कृषि पर आधारित थे। इन उद्योगों में प्रमुखता कपड़ा, चमड़ा और आभूषण उद्योग प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त पत्थर के कार्य, लकड़ी का काम और मृदभाण्ड निर्माण का कार्य भी किया जाता था। ऊनी कपड़ों, सोने और चांदी के आभूषणों के निर्माण–कार्य का वर्णन भी मिलता है।[24] इनमें प्रमुख सोने की चुड़ियां, बाजूबन्द व अंगूठी और अन्य आभूषण राजा–रानियों व दरबारियों की व्यक्गित मांग पर तैयार किए जाते थे। अवन्तिपुर में जार, घड़ा, हाण्डी, कटोरे, जग, बोतल व लैम्प के मृदभाण्ड मिले है। छोटे व्यवसायों में छकडा बनाने, मछली पालन, हार बनाने के कार्य किए जाते थे। बाहरी व्यापार मध्य एशिया, तिब्बत और चाईना के साथ होता था।

धार्मिक स्थिति :

कश्मीर अनेक धर्मों की शरणस्थी रहा है। कश्मीर में जहां पर शैव धर्म के विकास के चिन्ह मिलते हैं, वहीं पर बुद्ध व वैष्णव धर्म भी यहां से फैले हैं। नीलमतपुराण में हिन्दू धर्म के बारे में छठी व सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक का काफी विवरण मिलता है। प्राचीन कश्मीर में लोग नागों की पूजा करते थे। ऋतुओं व झीलों की भी पूजा की जाती थी। नीलमतपुराण से पता चलता है,[25] कि लोग भगवान शिव और विष्णु दोनों की पूजा करते थे। उन्होंने अनेक मंदिरों, मठों व विहारों का निर्माण करवाया। राजा ललितादित्य शैव धर्म को मानता था। द्वितीय लोहर वंशीय शासक ने ब्राह्मणें को उपहार में अनेक गाय, घोड़े व कई अन्य प्रकार की वस्तुंए दी। प्राचीन कश्मीर में लोग सूर्य देवता की भी पूजा करते थे। ब्रह्मा को सृष्टि का रचयिता, विष्णु को सृष्टि को चलाने वाला व भगवान शिव को सृष्टि का विनाशक माना जाता था।[26]

निष्कर्ष

इस प्रकार कल्हण ने इतिहास लेखन की पूर्व परम्पराओं से पूर्णतया पृथक एक तिथि क्रमिक इतिहास प्रस्तुत करे का श्रेष्ठ कार्य किया। ऐतिहासिक घटनाओं में न्यायधीश की दृष्टि को स्वीकारा तथा निरपेक्ष इतिहास लेखन का आदर्श प्रस्तुत किया। तथ्यों का संग्रह कर उनकी सत्यता का विश्लेषण किया। प्रत्यक्ष दर्शित घटनाओं में भी निरपेक्षता का पूर्ण निर्वाह किया है। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से राजतरंगिणी एक ऐतिहासिक कृति और कल्हण एक श्रेष्ठ इतिहासकार के रूप में मान्य है।

संदर्भ सूची

1. कौशिक, कुंवर बहादुर–कल्हण की राजतरंगिणी, पृ. 166
2. गर्ग, कमलेश, कल्हरण की राजतरंगिणी में राजनीतिक परिस्थितियां, पृ. 7
3. वही, पृ. 7
4. महाकवि कल्हण, राजतरंगिणी, पृ. 37
5. गर्ग, कमलेश, कल्हण की राजतरंगिणी में राजनीतिक परिस्थितियों, पृ. 10–11
6. मुंशी, विमला कुमारी, कश्मीर का इतिहास, संस्कृति तथा लोकगीत, पृ. 50
7. गर्ग, कमलेश, कल्हण की राजतरंगिणी में राजनीतिक परिस्थितियों, पृ. 11–12
8. कपूर, एम.एल., स्टडीज इन हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ कश्मीर, पृ. 67
9. कौशिक, कुंवर बहादुर, कल्हण की राजतरंगिणी, पृ. 167
10. मोहन कृष्ण, अर्ली मैडिवल हिस्ट्री ऑफ कश्मीर, पृ. 81
11. कौशिक, कुंवर बहादुर, कल्हण की राजतरंगिणी, पृ. 167
12. वही, पृ. 168
13. महाकवि कल्हण, राजतरंगिणी, पृ. 42
14. कौशिक, कुंवर बहादुर, कल्हण की राजतरंगिणी, पृ. 167
15. गर्ग कमलेश, कल्हण की राजतरंगिणी में राजनीतिक परिस्थितियां, पृ. 15
16. महाकवि कल्हण, राजतरंगिणी, पृ. 47
17. गर्ग, कमलेश, कल्हण की राजतरंगिणी में राजनीतिक परिस्थितियां, पृ. 17
18. मोहन कृष्ण, अर्ली मैडीवल, हिस्ट्री ऑफ कश्मीर, पृ. 87
19. गर्ग कमलेश, कल्हण की राजतरंगिणी में राजनीतिक परिस्थितियां, पृ. 17
20. वही, पृ. 19
21. मुंशी, विमला कुमारी, कश्मीर इतिहास, संस्कृति तथा लोकगीत, पृ. 61
22. मोहन कृष्ण, अर्ली मैडीवल हिस्ट्री ऑफ कश्मीर, पृ. 226
23. कपूर एम.एल., स्टडीज इन हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ कश्मीर, पृ. 187
24. वही, पृ. 189
25. मुंशी, बिमला कुमारी, कश्मीर इतिहास, संस्कृति तथा लोकगीत, पृ. 70
26. मोहन कृष्ण, अर्ली मैडीवल हिस्ट्री ऑफ कश्मीर, पृ. 264

RRIJM 2015, All Rights Reserved